प्रस्तावना

"*इत्थिभावो नो किं कयिरा चित्तम्हि सुसमाहितं*" यह उद्गार है उन भिक्षुणीयों के जो बुद्ध के धम्म एवं विनय में भली भाँति प्रतिष्ठित हो चुकी थी। वे स्वयं को बड़े आनंद एवं स्वाभिमान के साथ '*बुद्धस्स ओरतो धिता*' अर्थात बुद्ध की हृदय से उत्पन्न कन्या मानती थी। वे इसलिए ऐसा कहती थी, क्योंकि वे स्त्री भाव से मुक्त हो चुकी थी। अब वे इस अवस्था में आ चुकी थी कि उनका स्त्रीत्व उनके प्रगति में आड़े नहीं आ सकता था। वे मुक्त मन से एवं पूरे आत्मविश्वास के साथ यह कह पा रही थी कि उनका स्त्रीत्व उनका अहित नहीं कर सकता। वह चित्त में भली प्रकार से अभ्यस्त थी। वे बुद्ध की इस शिक्षा को जान गई थी की सम्यक मार्ग पर गया हुआ चित्त व्यक्ति की इतनी भलाई कर सकता हैं कि जितनी उसके अपने माँ –बाप और सगे संबंधी भी ना कर पायें।

बुद्ध की शिक्षा एवं विनय ने उनके जीवन में आमूलाग्र परिवर्तन लाया था। वे तत्कालीन समाज के सभी संस्कारों से एवं बंधनों से मुक्त हो गई थी। मन की ऐसी उच्चतम अवस्था तक वे ऐसे ही नहीं पहुँची थी। इसके लिए उन्होने अपने मलिन संस्कारों से, विकारों से, तत्कालीन समाज व्यवस्था से लढना पड़ा था। जो लढ़ी वे मुक्त हो पाई। जो बुद्ध की शिक्षा एवं विनय में भली प्रकार से प्रतिष्ठित हो गई, वे जीवन मुक्त की अवस्था को अर्थात अर्हत की अवस्था को प्राप्त कर पाई।

ये भिक्षुणियां समस्त संस्कार के लिए एक आदर्श बन गई। उन्होने संसार को यह दिखाया कि स्त्रियां भी जीवन के सर्वोत्तम धेय्य निर्वाण को प्राप्त कर सकती हैं। थेरिगाथा में उन समस्त स्त्रियों के अनुभवों का वर्णन मिलता हैं, जो निर्वाण के परम सुख का आनंद ले रही थी। थेरिगाथा में उन स्त्रियों के उच्चतम मानसिक अवस्था का वर्णन मिलता हैं। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए उन्हों ने विनयपिटक में दिये गए सभी नियमों का गंभीरता से पालन किया था। विनयपिटक में उन स्त्रियों के प्रारम्भिक मनोवस्था का वर्णन मिलता हैं। जहाँ स्त्रिया सांसारिक बंधनो में बंधी हुई थी। सांसारिक जीवन के संस्कारों से वे लढ़ रही थी। यहाँ उन भिक्षुणियों द्वारा किए गए छोटे मोटे अपराधों की सूची मिलती है और वे अपराध फिर से ना दोहराया जाए इसलिए भगवान द्वारा प्रज्ञप्त किए हुए विनय यहाँ मिलते हैं। भगवान ने ये विनय इसीलिए प्रज्ञप्त किए ताकि भिक्षुणिया जल्द से जल्द प्रारम्भिक मनोवस्था से जिसे भगवान 'कामावचर भूमि' कहते है उससे मुक्त हो जाए और वे उच्चतम मानसिक अवस्था अर्थात निर्वाण में प्रतिष्ठित हो जाए।

कंखावितरणी विनयपिटक की अट्ठकथा है। भगवान द्वारा प्रज्ञप्त विनयों का इसमें सविस्तर वर्णन दिया गया हैं। इसके रचयिता आचार्य बुद्धघोष हैं, जिहोने श्रीलंका में जाकर इसे पालि में अनुवादित किया था। यह ग्रंथ विनय से संबंधित उत्पन्न सभी शंका एवं संदेहों का निवारण करता हैं। शंका एवं संदेहों का निवारण करने के कारण ही इसका नाम कंखावितरणी रखा गया, ऐसा बुद्ध घोष इस ग्रंथ के आरंभ में ही बताते हैं। इस ग्रन्थ के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि प्रत्येक विनय का इसमें कितना सूक्ष्मतः वर्णन किया गया है। विनयों का वर्णन करते हुए उसमें आए हुए शब्दों के अर्थ एवं आशय बताये हैं। उस शिक्षापद के प्रत्येक अंग का वर्णन इसमें और किया गया हैं। इसके साथ यहाँ यह

भी बताया गया है कि यह किस परिस्थिति में आपत्ति हैं और किस परिस्थिति में नहीं। यह विनय किसके बारे में प्रज्ञप्त किया और कहाँ प्रज्ञप्त किया इसका भी वर्णन इसमें दिया गया हैं। इसप्रकार कंखावितरणी यह ग्रंथ प्रत्येक विनय को परिपूर्ण समझने के लिए अत्यंत आवश्यक ग्रंथ हैं।

इस ग्रंथ में तत्कालीन समाज व्यवस्था का भी वर्णन मिलता हैं। तत्कालीन समाज व्यवस्था में प्रचलित मान्यताए, धारणाओं का भी ज्ञान हमें मिलता है। इस धारणाओं से ग्रसित होकर भिक्षुणिया कैसे अपराध करती थी इसका ज्ञान भी हमें मिलता हैं। तत्कालीन समाज के प्रदूषित संस्कारों से युक्त भिक्षुणिया अपने काया एवं वाचा से नाना दुष्कर्म करती थी भिक्षुणियों के इन्ही कायिक एवं वाचिक व्यवहार को नियंत्रित एवं संयमित करने के लिए बुद्ध ने विनयों का प्रतिपादन किया था। इस ग्रंथ के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बुद्ध स्त्रियों की मानसिकता को कितनी भालि भांति जानते थे। स्त्रियों की उन्नति एवं प्रगति के लिए कौनसी चीजे बाधक बन सकती है। इसका बुद्ध को संपूर्ण ज्ञान था। उन चीजों से बचने के लिए ही बुद्ध ने विनय को प्रतिपादित किया था। कंखावितरणी ने उन विनयों का अंग उपांगों का वर्णन किया हैं। वह इसलिए ताकि प्रत्येक विनय को भालिभांति समझा जा सकें और प्रगति के रास्ते में आए प्रत्येक शंका का निवारण किया जा सके।

इस परिप्रेक्ष्य में कंखावितरणी इस ग्रंथ का अत्यंत महत्व है। लेकिन यह ग्रंथ संपूर्ण पालि में है और इसका हिन्दी में अभी तक अनुवाद नहीं किया गया। इसलिए विनय, तत्कालीन समाज व्यवस्था और स्त्रियों के विभिन्न मानसिक स्तर को समझने के लिए इस ग्रंथ का अनुवाद करना आवश्यक था। मैंने इस ग्रंथ का मेरी समझ और बुद्धि के साथ अनुवाद करने का प्रयत्न किया हैं। यह अनुवाद परिपूर्ण अनुवाद नहीं है। इसमे बहुत गलतिया हुई है लेकिन मैंने अनुवाद करते हुए उस शिक्षापद के आशय को बनाए रखने का प्रयास किया है। एवं इसमें आए हुए जानकारी को सामने लाने का प्रयास किया है। ताकि बुद्ध के शिक्षापदों को संसार भली भाँति समझ पाये और अपने विकास एवं उन्नति के मार्ग पर सभी बाधाओं को दूर कर पायें।